ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 196-199
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में चित्रित पारिवारिक समस्याएं

विद्या वर्मा
नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, ग्राम विभारपुर, पोस्ट– मानापुर,
जिला– प्रतापगढ़, (उ0प्र0), भारत

Received- 17.08.2020, Revised- 20.08.2020, Accepted - 22.08.2020 E-mail: - kmvidyaverma@gmail.com

सारांश : ***परिवार मनुष्य की प्रथम पाठशाला होती है। व्यक्ति जन्म से लेकर जीवन की अंतिम अवस्था तक परिवार पर ही निर्भर रहता है। परिवार मनुष्य और समाज के बीच सेतु का काम करता है। इस आधुनिकतावादी युग में भौतिकता की दौड़ में परिवार कहीं पीछे छूटता जा रहा है। जिससे व्यक्ति का परिवार और समाज से सम्बन्ध । धीरे–धीरे खत्म होता जा रहा है। परिणामस्वरूप परिवार टूटता बिखरता दिखाई दे रहा है। संयुक्त परिवार एकांकी परिवार का रूप ले रहे हैं। जिसके कारण बुजुर्गों को अनाथालय में रहना पड़ रहा है और बच्चों की देशभाल आया पर छोड़ दी जाती है। नासिरा शर्मा ने अपने साहित्य के माध्यम से निम्न समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है– जैसे– असफल दाम्पत्य जीवन, पुरूषवादी संकीर्णमानसिकता, स्त्री पुरूष सम्बन्ध विघटन, अलगाव बोध, निःसन्तान दाम्पत्य की समस्या इत्यादि ।***

कुंजीभूत शब्द– परिवार, पाठशाला, अंतिम अवस्था, निर्भर, समाज, आधुनिकतावादी युग, भौतिकता, सम्बन्ध।

असफल दाम्पत्य जीवन– प्राचीन काल से ही विवाह एक धार्मिक संस्कार माना जाता रहा है। पति–पत्नी का रिश्ता एक जन्म का नहीं सात जन्मों का माना जाता रहा है। पति–पत्नी एक दूसरे के पूरक माने जाते है। क के बिना दूसरा अधूरा माना जाता है। भारत में पितृसत्तात्मक परिवार की व्यवस्था प्राचीन काल से ही चली आ रही है। जिसमें पुरुष ही घर का मुखिया होता है। घर में महिलाओं को एक नौकरानी ही समझा जाता है। चाहे वह भले ही पति से ज्यादा योग्य एवं बड़े ओहदे पर ही क्यों न हो? नासिरा शर्मा ने 'शाल्मली' उपन्यास के माध्यम से असफल दाम्पत्य जीवन का यथार्थ दृश्य सामने रखा है। 'शाल्मली' उपन्यास में नरेश और शाल्मली पति–पत्नी है। पति नरेश अभिमानी और संकीर्ण मानसिकता का व्यक्ति है। लेकिन पत्नी शाल्मली शिक्षित और आधुनिक विचारधारा की होने के बावजूद परम्परागत आदर्शों और मूल्यों को मानती है। लेकिन नरेश को शाल्मली का बड़े ओहदे पर काम करना तथा उसकी प्रतिष्ठा से चिढ़ होती है। इससे शाल्मली को अपने को संभालना कठिन हो जाता है। ''लाख वह सहिष्णुता का परिचय देती, मगर उसके मन का उद्‌गार जब मस्तिष्क पर छाने लगता, तो वह बौरा जाती।''[1]

नरेश शाल्मली को हर समय इस बात का एहसास दिलाता रहता है कि वह एक स्त्री है। और स्त्री की जगह उसके पैरों में होती है यही उसकी असली पहचान है। शाल्मली का नौकरी करना और काम के सिलसिले में दूर–दूर जाना उसे अच्छा नहीं लगता है। वह शाल्मली से कहता है, ''मैं तुम्हें नौकरी करने की छूट दी, इसका ये अर्थ नहीं कि तुम अपने को पूर्ण स्वतंत्र समझने लगो।''[2] नरेश यह दिखाना चाहता है कि औरत मर्द की बराबरी नहीं कर सकती है। वह उसे दासी बनाकर रखना चाहता है। शाल्मली नरेश से पूछे बिना बाहर चली जाती है। तब वह कहता है, '' अब तुम मेरी नकल मत करो। मैं मर्द हूँ, कहीं भी आ जा सकता हूँ। तुम औरत हो अपनी मर्यादा को पहचानो।''[3]

सफल वैवाहिक जीवन के लिए उदारता, आत्मत्याग, ह्रदय की पवित्रता, सहिष्णुता और भद्रता की आवश्यकता होती है, जो नरेश में नहीं के बराबर है। नरेश शाल्मली के नौकरी करने और लोगों से खुले दिन से बात करने पर कहता है, '' तुम औरतें अपने को जाने क्या समझती हो? बाहर नहीं निकलोगी, काम नहीं करोगी तो संसार के सारे काम ठप हो जायेंगे।''[4]

शाल्मली को नौकरी करने से रोकने वाला सेमिनार में सम्मिलित होने से मना करने वाला नरेश जब दूसरी स्त्री से सम्बन्ध रखता है, तब शाल्मली के आत्मसम्मान को चोट पहुँचती है और वह आक्रामक होते हुए कहती है, '' फिर सुनो, नरेश! मुझे और उसके बीच एक को चुनने की स्वतंत्रता तुम्हें देती हूँ। उसके साथ रहकर तुम्हें अपना जीवन सार्थक लगता है, तो .....। यह मेरा निर्णय और तुम अपने को स्वतंत्र समझो।''[5] लेकिन अभिमान में चूर नरेश को इन सब बातों से कोई फर्क ही नहीं पड़ता।

इसके विपरीत पाश्चात्य संस्कृति में विवाह एक समझौता माना जाता है। जिसका फायदा उठाकर महिलाएँ, पुरुषों को खासकर भारतीय पुरुषों को बर्बाद कर देती हैं।

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

पहले तो लड़कियाँ लड़कों को अपने प्रेमजाल में फंसाती है। फिर शादी कर लेती है। शादी के बाद कुछ दिन सब कुछ ठीक चलता है। लेकिन धीरे–धीरे वह अपने पति को इस कदर अपने जाल में फंसाती है कि उसे कुछ पता ही नहीं चल पाता है। यही नहीं वह महिला कानून का सहारा लेकर पति पर झूठे आरोपों पर आरोप लगाकर सलाखों के पीछे करवा देती है। यही नहीं उसके जिगर के टुकड़े को उससे छीन लेती है। नासिरा शर्मा ने 'पारिजात' उपन्यास में रोहन की इसी दयनीय स्थिति का चित्रण किया है। उसकी स्थिति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है। वह अपनी माँ से कहता है, "मॉम! आप मुझे टेंस कर रही हैं। क्यों नहीं समझती हैं कि मेरा बेटा चोरी हुआ है। मैं इल्जामों में घिरा हूँ। मेरा घर, मेरा सामान, मुरे कुत्ते, मेरे पास कुछ भी तो नहीं हैं। यहाँ तक कि नौकरी भी गई। कार भी नहीं। वाटर टैक्सी से इतनी सख्त गर्मी में चलता हूँ। पैदल मीलों भटकता हूँ.... आप क्या जानें मेरा दर्द ? पिछले दो दिन से भूखा हूँ..... पास में....."। वह अपनी बेबसी को अपनी माँ के सामने इस प्रकार प्रकट करता है, " मैं तन्हा हूँ मॉम! कैसे बताऊँ कि मैं कितना लोनली था। काम से लौटता था तो वह सोती मिलती थी और जब वह सुबह जाती थी तो मैं सोता होता.... शाम को उसका मेरे साथ बाहर निकलने का मन न होता.... मैं कैसे अपने अकेलेपन से निपटता था, यह तो सिर्फ मैं जानता हूँ..... अब टेसू के बिना मेरी सुबह....."[8]

रोहन परिवार को टूटने से बचाना चाहता था। इसलिए वह ऐलेसन की छोटी–छोटी गलतियों को नजर अंदाज कर देता था। लेकिन वह सफल नहीं हो पाया। वह कहता है, " ऐलेसन मुझे पालतू बनाना चाहती थी। इस हद तक कि मेरा कोइ वजूद बाकी न रह पाए। एक आदमी घर बनाए रखने के लिए किस हद तक समझौता कर सकता है, आखिर किस हद तक .....?"[7]

पति–पत्नी के सुखी दाम्पत्य जीवन में किसी तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति दाम्पत्य जीवन में अभिशाप सिद्ध होती है और सफल दाम्पत्य जीवन में दरार पड़ जाती है। समाज में निजी स्वतंत्रता और प्रतिष्ठा का हक पति–पत्नी दोनों को बराबर दिया गया है। लेकिन इस स्वतंत्रता पर कुछ बंधन भी हैं जिससे स्वतंत्रता स्वच्छंदता में न बदल जाए। पति पत्नी परस्पर शारीरिक सुख से यदि संतुष्ट नहीं है तो उनके वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न हो जाता है। 'संगसार कहानी में आसिया और अफजल पति–पत्नी हैं। आसिया अपने पति अफजल से संतुष्ट नहीं है। और वह उसे छोड़ना भी नही चाहती है। वह अपने प्रेमी से सिर्फ शारीरिक सुख प्राप्त करना चाहती है। वह अपनी बहन से कहती है, " अगर शौहरदार औरत को मर्द पूरी तरह हासिल न हो उसकी इच्छाओं ओर समस्याओं के मुताबिक, तो तुम्हारा समाज और कानून कोई हल बताता है।"8 और आखिर आसिया पति का साथ छोड़कर प्रेमी के साथ फरार हो जाती है।

दाम्पत्य को कभी हमारे परिवार की रीढ़ की हड्डी मानी जाती थी लेकिन अब उसमें लचीलापन आ गया है। परिणाम स्वरूप दाम्पत्य जीवन में काफी बदलाव आने लगा है।

संतानहीनता– भारतीय समाज में संतान प्राप्ति को जीवन के मुख्यों लक्ष्यों में एक माना जाता है। अगर किसी कारणवश संतान की प्राप्ति नहीं हुई तो इसका जिम्मेदारी पत्नी को ठहराया जाता है। उसको दोषी मानकर उसे पीड़ा, दुःख और यातनाएँ दी जाती हैं। पति–पत्नी का दाम्पत्य जीवन कितना भी सुख चैन से बीत रहा हो अगर उन्हें सतान की प्राप्ति नहीं होती तो आपसी सम्बन्ध बिगड़ने लगते हैं। कभी–कभी तो बात विवाह–विच्छेद तक आ जाती है। नासिरा शर्मा के साहित्य में संतान के कारण विवाह विच्छेद के उदाहरण नहीं हैं लेकिन औलाद न होने के कारण तनाव के उदाहरण दिखाई देते हैं। 'मिस्र की ममी' कहानी में शादी के छः वर्ष बाद भी जब योता की गोद नहीं भरती है। "शादी के छह साल गुजर गए। योता की गोद खाली है। शुरू में जिंदगी जीने की तमन्ना खुशियाँ समेटने की इच्छा ने इस ओर ध्यान ही न देने दिया।"[9] लेकिन अब उसके मन में संतान प्राप्ति की इच्छा और तीव्र हो जाती है। इससे वह पूरी तरह टूट जाती है।

संतान प्राप्ति के लिए लोग अपना खुशहाल दाम्पत्य जीवन कुर्बान कर दूसरी शादी के लिए मजबूर हो जाते हैं। 'बावली' कहानी में सलमा औलाद के लिए अपने ही पति की दूसरी शादी कराती है। वह सोचती है, " मैं पानी से भरी बावली रिश्तों के नाम पर बंटती आई। हमेशा दिया, कुछ लिया नहीं। आज जब अपनी कोख से एक बच्चा न दे सकी, तो मैं एक बेकार शै मान ली गई। मेरा और खालिद का रिश्ता इस औलाद को लेकर टूट गया।"[10] इसी तरह संतान प्राप्ति की समस्या 'पुराना कानून' और दिलआरा कहानी में भी दिखाई देता है।

अनमेल विवाह– अनमेल विवाह समाज में नारी शोषण का एक उदाहरण है। अनमेल विवाह प्रथा समाज में बहुत बड़ी विकृति के रूप में है, जिसके कई दुष्परिणाम सामने आते हैं। अनमेल विवाह के कारणों में आशिक्षा और गरीबी प्रमुख है। 'जीरो रोड' उपन्यास में नासिरा शर्मा ने अनमेल विवाह का चित्रण किया है। गरीबी के कारण शीला की माँ 28 वर्षीय शीला का विवाह 55 वर्ष के व्यक्ति से

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

करने के लिए मजबूर हैं। राधा रानी के यह पूछने पर कि लड़के की उम्र क्या होगी? चालीस बायालीस साल तब शीला की माँ कहती है, " नहीं पूरे पचास! हो सकता है असली उम्र पचपन हो।"[11]

बदलते पारिवारिक सन्दर्भ– समाज में परिवर्तन हो रहा है। समाज के साथ–साथ परिवार में भी बदलाव आया है। इस बदलाव से लोगों का व्यक्तिगत जीवन भी अछूता नहीं रहा है। भौतिकता की चकाचौंध में वह प्रगति की ओर भाग रहा है। लेकिन वह जितनी तेजी से प्रगति की ओर भाग रहा है उतनी ही तेजी से अपनी संस्कृति, समाज और परिवार के प्रति उदासीन होता जा रहा है। 'दुनिया' कहानी में अपनी ख्याति के लिए शोभना पिता के बीमार होने पर भी उनके पास न जाकर अपने काम में व्यस्त रहती है। पिता की मृत्यु के बाद भी शोभना पिता के पास गांव न जाकर मीटिंग में चली जाती है। उसके इस व्यवहार को लेकर पति–पत्नी में कहा सुनी हो जाती है। उसका पति सुरेश जब उसे व्यवहारी बनने की सलाह देता है तब वह कहती है, "मैंने तो बाबा को नहीं मारा, न उन्हें मारने का षड्यंत्र रचा। आखिर वह बूढ़े थे, ऊपर से बीमार, उन्हें जाना ही था। एक दिन इसी तरह सबको जाना है। इसमें नई बात क्या है? मौत सच्चाई है : मगर यह भी एक कड़वा यथार्थ है कि यह संसार किसी की मौत से रूकता थमता नहीं है। सब कुछ पूर्ववत चलता रहता है। खुद को देखो, अपनी माँ के मरने पर तुम होश खो बैठे थे, मगर अब उन्हें याद भी नहीं करते।"[12] कहकर अपने इरादे स्पष्ट करती है। शोभना पद प्रतिष्ठा के आगे पारिवारिक रिश्तों को कुछ नहीं समझती है। इस वजह से पति–पत्नी में कभी–कभी नोंक–झोंक भी होती रहती है। समाज में परिवार का स्थान महत्वपूर्ण है और परिवार रिश्तों में आपसी तालमेल पर निर्भर होता है।

समाज में तेजी से बदलाव आ रहा है। जिसका असर पारिवारिक रिश्तों पर भी पड़ रहा है। समाज में स्थिति यह है कि झूठी प्रतिष्ठा के पीछे भाग रहे लोगों की मानवीय संवेदनाएँ मानों कहीं खो गई है। 'अक्षयवट' उपन्यास में सलमान का बड़ा भाई इंजीनियर है। उसके पास सब सुख सुविधएं हैं। इन सुख–सुविधाएँ और प्रतिष्ठा के आगे वह अपने माता–पिता को भूल जाता है। तब उसे अपने माता–पिता के रहन–सहन पर शर्म आती है और छोटे भाई सलमान का छोटे–मोटे काम करने में वह अपना अपमान समझता है। " सलमान का सिर्फ एक ख्वाब था। वह भी घरेलू सियासत की नजर हो गया था। भाई इंजीनियर थे। फर्म भी ठीक थी। तनख्वाह अच्छी थी। भाभी के आने के बाद वर्गों की असमानता का प्रश्न उठ खड़ा हुआ। हम गरीब और पिछड़े बना दिए गये। वे एडवांस और अमीर हो गये। भाई को मेरा छोटे मोटे स्कूल में काम करना पसंद न था। हमेशा भड़क जाते थे कि उनकी इस शहर, इस मोहल्ले में इज्जत है जो मैं छोटी मोटी नौकरी कर खाक में मिला दूँगा।

बुजुर्गों की दयनीय स्थिति– लोगों की एकांकी परिवार में रहने की चाहत ने समाज में बहुत बड़ी समस्या पैदा कर दी है। परिवार में बुजुर्गों को बोझ समझा जाने लगा है। ग्रामीण इलाकों में लोग जीविकोपार्जन के लिए घर से बाहर चले जाते हैं, और घर पर अपने बुजुर्ग माता–पिता, पत्नी और बच्चों को छोड़ जाते हैं। बेटा अपने परिवार से दूर रहता है ताकि उसके माँ–बाप की जरूरतें पूरी हो सके और खुश रहें। लेकिन उनकी पत्नियाँ पति पर अपना पूरा अधिकार समझती हैं। और उनके बाप को कुछ नहीं समझती। पति की गैरमौजूदगी में पत्नी निरंकुश हो जाती हैं। वृद्ध सास–ससुर को उनके ही अपने घर में कैद करके रखती हैं। नासिरा शर्मा ने बुजुर्गों की इस समस्या को 'कागज की नांव' उपन्यास में जहूर मिया के माध्यम से व्यक्त किया है, " उनका सिर दांतों की वजह से बुरी तरह दुख रहा था। खाना खाना कठिन लगता तो चाय पी–पीकर पेट भरते। दिल में बार–बार यह सवाल उठ रहा था कि मौका अच्छा है। पी0सी0ओ0 में जाकर जाकिर से बात करने का मगर फायदा क्या? बात राज में कहाँ रह पायेगी? वह पी0सी0ओ0 वाला लड़का सब कुछ महलका से कह देगा और उन परजुल्म और सितम और बढ़ जायेंगे। खत भी कैसे लिखे? डाकखाने जाना, टिकट या लिफाफा लाना क्या महलका से छुपा रहेगा? उसके कब्जे में सारे दुकानदार हैं। हर बात की खबर उसे देते हैं। वह तो अपने घर में नजरबंद होकर रह गए हैं।"

बेटा जहीर अपने पिता जहूरमिया के सुख–सुविधाओं का बहुत ख्याल रखता है। लेकिन उनकी पत्नी जहूरमियां के साथ अजनबियों जैसा व्यवहार करती है। वह अपने ही घर में अपने मन की बात किसी से नहीं कर सकते हैं। "जहूर मियां कमरे में अकेले बैठे शाम की चाय का इंतजार कर रहे थे। कई बार दिल किया कि गोलू को आवाज दें फिर महलका के कड़वे लहजे के डर से दिल मसोसकर रह गए। बेटे ने उनके आराम का सारा सामान कमरे में सजा दिया था। बिजली की केतली, मोबाइल, छोटा सा टी0वी, रेडियो वगैरह ताकि अब्बा खुश रहें मगर महलका उनकी हर गलती पर बच्चों की तरह उन्हें सजा देती और बहाने–बहाने से एक–एक करके चीजें वहाँ से उठा ले जाती। ढेरों तस्वीहें थीं। वह तक नहीं छोड़ी। अच्छे कपड़े घुलने और सूखने के बहाने गायब हो जाते और ।"[13]

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

जहूरमियाँ को खाना–पानी देने की बात कौन कहे यहाँ तो महलका और उसकी माँ मिलकर जहूरमियाँ के मरने की कामना करती हैं। वह अपनी स्वच्छदता के लिए बाकी सब रिश्तों को तोड़ने की भरसक प्रयास करती है। इसके लिए वह मौलवी का भी सहारा लेती है। महलका की माँ मौलवी से कहती है, "आपकी दुआ से बेटी की नंद का ऐसा घर बर्बाद हुआ कि उसने तो गर्दन में फाँसी लगा ली, मियां उसका मर खप गया मगर ससुर जेल में झूठे मुकदमें में जरूर फंसा है। मेरी बेटी का एक शाने का बोझ तो हलका हुआ, अब उस बूढ़े गिद्द का भी कुछ हला–भला कर दें।"[14]

नासिरा शर्मा ने 'कुइयाँजान' उपन्यास में बीमार व लाचार बुजुर्ग को दयनीय दशा का मार्मिक चित्रण कुछ इस प्रकार किया है। बीमार बुजुर्ग डॉ0 कमाल से अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहता है, " जब तक कमावत रहे, कभी अपेन बेटवन का वासी–तिवासी नहीं खिलावा, मगर बहू का राज है! बचा–खुचा दे देत हैं। भगवान का शुक्र अदा कर खाय लेत हैं।"[15]

समाज में बूढ़े बोझ समझे जाने लगे हैं। उन्हें बेकार की वस्तु समझकर एक किनारे डालने का चलन बढ़ रहा है। वृद्धों के इलाज पर पैसे खर्च करना लोगों को फिजूलखर्ची लगता है। तभी तो वृद्ध आदमी की बहू कहती है, " अरे कउन–सा रोग लग गवा है जो डाक्टर की फीस मा पैसा बहाय रहा है बूढ़ा! अब कहत है, बासी न खाबे, डॉक्टर मना किए हैं। तो रहो भूखे! हमार का जात है...." नासिरा शर्मा ने समाज में विधुर वृद्धों की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है। बेटों की गैरमौजूदगी में बहुओं द्वारा उन पर अत्याचार किये जाते रहे हैं। लेकिन बेटो की सूझ–बूझ द्वारा लेखिका ने जल्द ही इस समस्या का समाधान कर लिया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नासिरा शर्मा : शाल्मली , पृ0–141
2. नासिरा शर्मा : शाल्मली , पृ0–74
3. नासिरा शर्मा : शाल्मली , पृ0–74
4. नासिरा शर्मा : शाल्मली , पृ0–47
5. नासिरा शर्मा : शाल्मली , पृ0–146
6. नासिरा शर्मा : परिजात , पृ0–242
7. नासिरा शर्मा : परिजात , पृ0–245
8. नासिरा शर्मा : परिजात , पृ0–244
9. नासिरा शर्मा : संगसार, पृ0–123
10. नासिरा शर्मा : शामी कागज, पृ0–27
11. नासिरा शर्मा : पत्थरगली , पृ0–21
12. नासिरा शर्मा : जीरो रोड , पृ0–23
13. नासिरा शर्मा : शामी कागज, पृ0–133
14. नासिरा शर्मा : इन्सानीनस्ल, पृ0– 96
15. नासिरा शर्मा : अक्षयवट, पृ0–297
16. नासिरा शर्मा : कागज की नाव, पृ0–10
17. नासिरा शर्मा : कागज की नाव, पृ0–13
18. नासिरा शर्मा : कागज की नाव, पृ0–18
19. नासिरा शर्मा : कुइयाजान, पृ0–168
20. नासिरा शर्मा : कुइयाजान, पृ0–170

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*